पक्षी-दर्शन

(अपने पर्यावरण से सीखने का अनूठा प्रयास)

सागर जिले के राहतगढ़ ब्लॉक की शाला-कल्याणपुर में बच्चों के जीवन के अनुभवों से जुड़कर पर्यावरण अध्ययन को सीखने का प्रोजेक्ट तैयार किया गया जिसमें बच्चे अपने शिक्षक के साथ गाँव में पेड़ों, चट्टानों, जंगलों में पक्षियों के असामयिक मरे पाए जाने पर शोध करने में रूचि लेने लगे, जिसके लिए विद्यार्थी उत्सुक होकर प्रश्न करने, ध्यानपूर्वक अवलोकन करने, चर्चा करके कारणों का पता लगाने और वर्गीकरण, विश्लेषण से प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार करने में उत्साह से कार्य किए। इससे बच्चों के साथ गाँव के लोगों में भी पक्षियों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ी है।

प्रोजेक्ट की शुरूआत में शाला के शिक्षक रामेश्वर लोधी एवं स्कूल प्रधानाध्यापिका श्रीमती वीणा राय ने पक्षियों के बारे में रोचक जानकारियाँ बच्चों को सुनाई और उनके फोटोग्राफ्स दिखाते हुए उनकी पहचान बच्चों को कराई। इसमें समीप के पर्यावरण विद श्री हिमांशु खोले का भी सहयोग लिया गया, जो प्रति सप्ताह एक दिन विद्यालय में आकर बच्चों को रंग-बिरंगे पक्षियों की जानकारी देते और उनकी विशेषताओं पर चर्चा करते।

शिक्षक ने स्कूल के पीछे बबूल के पेड़ के नीचे मिट्टी के सटोरों में पक्षी के लिए दाना और पानी भी रखना आरंभ किया, जिससे प्रवासी पक्षी भी आने लगे, प्रार्थना सभा में भी गीत, कविताएँ, कहानियों के प्रसंग पक्षियों से संबंधित होते। धीरे-धीरे पक्षियों के प्रति विद्यार्थियों का लगाव बढ़ता गया और शिक्षक के सहयोग से बच्चों ने गाँव में मृत पक्षियों का ब्यौरा दर्ज किया और एक सरल तालिका में उसे लिखा-

क्रमांक	पक्षी का नाम	तारीख	कहाँ मिला	किसे मिला
1	चमगादड़	5-1-2019	कल्याणपुर स्कूल में	विष्णु
2	बुलबुल	20-1-2019	खुरई रोड	हिमांशु
3	बुलबुल	22-1-2019	घर की बाड़ी में	कुश
4	गौरैया	22-1-2019	घर के सार में	श्रद्धा
5	दर्जिन चिड़िया	23-1-2019	घर की बाडी में	संतोष
6	गिद्ध	24-1-2019	गौशाला के पास	श्यामारानी
7	गौरैया	8-2-2019	स्कूल के पास	नितिन
8	बगुला	5-2-2019	खुरई में	हिमांशु
9	फाख्ता	11-2-2019	घर के पास	नितिन
10	बुलबुल	11-2-2019	तारों में फंसा हुआ	सौरभ

राहतगढ़ ब्लॉक में 22 फरवरी 2019 को बाल मेले का आयोजन किया गया, जिसकी थीम रखी गई ''पक्षियों का संरक्षण'' जिसमें पक्षियों के चाट्‌र्स, हस्तशिल्प से तैयार किए गए मिट्टी, कागज के खिलौने और बच्चों के द्वारा बने पक्षी अवलोकन के चित्रों को प्रदर्शित किया गया। इसी थीम पर बच्चों ने एक विशेष नाटक ''दयालु सिद्धार्थ'' का मंचन किया, जिसे मेले के मुख्य अतिथि फारेस्ट रेंजर द्वारा खूब सराहा गया। बच्चों ने उनसे प्रश्न करके पक्षियों को बचाने के लिए सुझाव भी प्राप्त किए गए।

प्रोजेक्ट को एक सुखद पड़ाव तब प्राप्त हुआ, जब पक्षियों के प्रति बच्चों ने अपने अभिभावकों को भी जोड़ना शुरू किया और घर-आंगन को पक्षियों के चित्रों से सजाया जाने लगा, आंगन में मिट्टी के बर्तनों में दाना-पानी रखने लगे, बर्तनों के आकार पर चर्चाएं होती कि पक्षियों की चोच लंबी होगी तो किस आकार का बर्तन उपयुक्त होगा, ऐसी चर्चाओं से भी वे एक-दूसरे से सीखते रहें।

अब समूह द्वारा खेत, जंगल से दूर जाकर नदी किनारे पर पाए गए पक्षियों की जानकारी एकत्रित की जाने लगी, धीरे-धीरे फाख्ता, कलीचीड़, 'वूडकीपर' को भी ढूंढा गया और उनके घोंसलो, अंडो पर शिक्षक, नाविकों के साथ संवाद स्थापित हुए। पुट्ठों के डिब्बों से कृत्रिम घोंसलें तैयार किए गए और छोटे तिनके भी उनमें रखे गए। इससे पक्षियों की अकाल मृत्यू के कारणों को ढूंढने में मदद मिली-

1. खेती कार्यों में उपयोग किये जाने वाले कीटनाशक और खरपतवारनाशक दुश्मन है, पक्षियों के। इससे दानों के साथ उनके पेट में थोड़ी सी मात्रा कीट नाशक की जाने से ही उनकी आंते एकदम से फट जाती हैं।
2. नदी किनारे पक्षी अधिक समय तक जीवित बने रहते है क्योंकि रासायनिक जहर दानों के साथ लेने पर तुरन्त उन्हें पानी मिल जाता है तो उनका असर कम हो जाता है।
3. घरों के पास गंदगी की जगहों पर पॉलीथिन का छोटा टुकड़ा भी उनके लिए जानलेवा होता है।
4. पक्षी भी ऑक्सीजन लेते है, अतः अधिक गंदगी, पेड़ो की कटाई से उनको साँस लेने में दिक्कतें होती हैं।
5. अत्यधिक ठण्ड लगने से भी पक्षियों की अकाल मृत्यु होती है।

प्रोजेक्ट में पक्षियों की थीम पर ''बाल मेला'' आयोजित करने से योगात्मक आकलन भी हुआ और इससे बच्चों के सीखने के उत्साह को दुगना कर दिया। इस प्रोजेक्ट से बच्चों को पक्षियों के घोसलों की सामग्री, अंडो के आकार, रंग और घोसलें बनाने की जगहों की पहचान प्राप्त हुई। इससे रोजाना के अनुभवों को बिन्दुवार दर्ज करके डायरी लेखन के कार्य को करने में बच्चे आनंदित हुए, उन्हें प्रोजेक्ट कार्य को सही तरीके से करने की दिशा प्राप्त हुई एवं कार्य करने का रोचक अनुभव भी प्राप्त हुआ। शिक्षक एवं स्कूल प्रधानाध्यापिका के मिले-जुले कायों से पर्यावरण अध्ययन के कौशल और संवेदन शीलता को बच्चों में स्थापित करने का सकारात्मक प्रयास सफल हुआ।

सागर जिले के राहतगढ़ ब्लॉक की कल्याणपुर शाला के शिक्षक-विद्यार्थियों का समूह

प्रयास जारी है.....